मुख्य परीक्षा

1. **स्पष्ट करें कि स्वयं सहायता समूह समावेशी विकास के पूरक है। (10 अंक)**

Explain that the self-help groups are complementary to the inclusive development. (10 Marks)

मॉडल उत्तर

उत्तर- भूमिका में निम्न बातों को शामिल करना चाहिए-

- आर्थिक, सामाजिक समस्तरीय समस्याओं की उपज स्वयं सहायता समूह, सामूहिक तथा व्यक्तिगत प्रयासों का परिणाम है। जिसका अंतिम परिणाम उन आवश्यक परिस्थितियों का निर्माण करना है, जिसके द्वारा समावेशी विकास सुनिश्चित कर राष्ट्र की प्रगति में योगदान दिया जा सके।

समावेशी विकास का पूरक :

- वित्तीय समावेशन करना।
- बचत की भावना के विकास द्वारा आय की असमानता को कम करना।
- सामूहिक प्रयास द्वारा रोजगार का निर्माण तथा आर्थिक गतिविधियों में बढ़ावा।
- महिला एवं श्रमिक वर्ग का आर्थिक सशक्तिकरण कर बिचौलियों एवं महाजनों से सुरक्षा प्रदान किया है।
- जागरूकता द्वारा तकनीकी ज्ञान का संवर्धन।
- सामुदायिक भावना का विकास कर समस्याओं का साझा समाधान।
- राजनैतिक चेतना द्वारा लोकतंत्र का विकास।
- लुप्त होती कलाओं, परम्पराओं, ज्ञान तथा कौशल का संरक्षण।
- दूर-दराज के क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देकर विकास एवं लोगों के जीवन स्तर में सुधार।

अंत में संक्षिप्त व संतुलित निष्कर्ष दें।

मुख्य परीक्षा

2. स्थानीय शासन एवं विकास कार्यक्रम सामाजिक न्याय के लक्ष्य से किस प्रकार संबंधित है? उपयुक्त उदाहरण के साथ स्पष्ट करें। (15 अंक)

How is local government and development programs related to the goal of Social Justice? Elucidate with proper examples. (15 Marks)

मॉडल उत्तर

उत्तर- भूमिका में निम्न बातों को शामिल करना चाहिए-

- स्थानीय शासन से तात्पर्य पंचायती राजव्यवस्था से है, जिसका संविधान के अनुच्छेद 40 में उल्लेख किया गया है, जो लोकतांत्रिक व्यवस्था पर आधारित है। जिसमें जन सहभागिता एक आवश्यक कड़ी है।
- सरकार द्वारा क्रियान्वित विकास कार्यक्रमों को आम नागरिकों तक पंचायतों के द्वारा पहुंचाया जाता है।

विषय वस्तु में :

- ग्राम विकास संबंधी कार्य
- प्राथमिक विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय में औपचारिक कार्य।
- मध्याह्न भोजन योजना जैसे कार्यों का क्रियान्वयन।
- युवा कल्याण संबंधी कार्य।
- ग्रामीण क्षेत्र में पेय जल से संबंधित राजकीय नलकूपों की मरम्मत व रख-रखाव।
- पशुधन विकास संबंधी कार्य।
- महिला एवं बाल विकास संबंधी कार्य।
- अति संवेदनशील वर्गों से संबंधित विभिन्न पेंशन योजनाओं की स्वीकृति।
- राशन की दुकानों का आवंटन।
- मनरेगा में पंजीकरण तथा कार्यों का निर्धारण और क्रियान्वयन।
- क्षेत्रीय विषमता और आवश्यकताओं के अनुसार राज्य तथा केंद्र से संसाधनों तथा विकास की मांग।
- केंद्र को क्षेत्रीय विषमता के आधार पर योजनाओं के निर्माण में सहयोग।
- जनता की राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित कर लोकतंत्र को मजबूत बनाना।
- स्वच्छता और अक्षय ऊर्जा के विकास से अवगत कराना तथा योजनाओं का सही क्रियान्वयन सुनिश्चित करना।
- सरकार के द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं से जनता को अवगत करना इत्यादि।

अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

मुख्य परीक्षा

3. ''बाल भिखारी अपराधी नहीं, पीड़ित है।'' इस कथन के पक्ष तथा विपक्ष में तर्क दीजिए। (15 अंक)

"Child beggar is not a perpepator but is an aggrieved." Present arguments in fovour and against the statement. (15 Marks)

मॉडल उत्तर

उत्तर- भूमिका में निम्न बातों को शामिल करना चाहिए-

- सामान्यत: 14 वर्ष तक के आयु वर्ग के बच्चों द्वारा भिक्षाटन कर जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति को बाल भिक्षावृत्ति कहा जाता है।
- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता के आँकड़ो के अनुसार देश में लगभग 3,72,217 बच्चों द्वारा भिक्षावृत्ति किया जाता है।

विषय वस्तु में-

- भारत में बाल भिक्षावृत्ति सुनियोजित कारोबार का रूप ले चुका है, जिससे देश के विभिन्न हिस्सों से अपहृत तथा चुराये गये बच्चों को नियोजित किया जाता है।
- एक आँकड़े के मुताबिक देश में औसतन 60,000 बच्चे हर साल चोरी होते हैं, जो बाल माफियाओं द्वारा अंजाम दिया जाता है, जिससे प्रशासन और समाज की असंवेदनशीलता के कारण केवल 10% या इससे भी कम अपने घर तक पहुँच पाते हैं।
- कभी-कभी घरों में काम करने वाली बाई के द्वारा भी मालिक के दुधमुहे बच्चों को भी भिक्षावृत्ति के लिए प्रयोग किया जाता है।
- कई बार सामान्यत: एक परिवार के बच्चों की संख्या ज्यादा व संसाधन कम होने के कारण अभिभावकों द्वारा भी बच्चों से भिक्षावृत्ति कराया जाता है।
- शरणार्थी समस्या के कारण उत्पन्न भिक्षावृत्ति।
- सामान्यत: इन चोरी के बच्चों का अंग-भंग कर बाल माफियाओं द्वारा भिक्षावृत्ति में प्रयोग किया जाता है। इस अर्थो में बाल भिक्षावृत्ति स्वत: पीड़ित है, जिन्हें न्याय की आवश्यकता है।

विपक्ष :

- यह सत्य है, समाज में बाल भिक्षावृत्ति बढ़ती जा रही है, जिसके कारणों में जनसंख्या वृद्धि एक प्रमुख कारण है, जहाँ संसाधनों के अभाव के कारण यह प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।
- अभिभावकों में शिक्षा की कमी के कारण बच्चों में शिक्षावृत्ति की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।
- गरीबी तथा घर के मुखिया की अकाल मृत्यु तथा प्राकृतिक आपदा के कारण उत्पन्न बाल भिक्षावृत्ति।
- गलत संगती, नशाखोरी की आदतों से उत्पन्न भिक्षावृत्ति को पीड़ित नहीं कहा जा सकता।

अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

मुख्य परीक्षा

4. सटीक उदाहरणों के साथ स्पष्ट करें कि भारत में बाल श्रम उन्मूलन में गैर सरकारी संगठन तथा स्वयं सहायता समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। (10 अंक)

Elucidate with examples that the Non-government organisations and self-helf groups can play an important role in eradication of child labour in India. (10 Marks)

मॉडल उत्तर

उत्तर- भूमिका में निम्न बातों को शामिल करना चाहिए-

- यू.एन. कंवेन्सन ऑन चाइल्ड राइट के अनुसार हर वह बालक बाल श्रमिक है, जिसकी आयु 18 वर्ष से कम है तथा जो किसी भी कार्य में श्रमिक के रूप में नियोजित है।

विषय वस्तु में निम्न तथ्यों को शामिल करें-

- भारत में कार्यरत गैर सरकारी संगठनों द्वारा बाल श्रम उन्मूलन के क्षेत्र में तमाम प्रयास किये गये जैसे- बचपन बचाओं आंदोलन, Save the children इत्यादि।
- शिक्षा के महत्त्व से अवगत कराकर बाल श्रम का उन्मूलन किया जा रहा है।
- एन.जी.ओ. दूर-दराज के क्षेत्रों में कौशल विकास द्वारा गरीबी उन्मूलन कर बाल श्रम का समाधान करते हैं।
- बाल श्रम उन्मूलन से संबंधित सरकार प्रायोजित योजनाओं से अवगत कराते हैं।
- यह गैर सरकारी संगठन बाल श्रम मुक्ति के लिए सामान्य तरीकों के साथ छापेमारी द्वारा मुक्त कराकर उनका पुनर्वास तथा दोषियों को सजा दिलाने का कार्य करते हैं।
- इस संदर्भ में कैलाश सत्यार्थी द्वारा 103 देशों की यात्रा और नेतृत्व उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है।
- दूर-दराज के क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों द्वारा वित्तीय समावेशन, स्वरोजगार निर्माण द्वारा गरीबी और भुखमरी की समस्या का समाधान कर बाल श्रम का उन्मूलन कर रहे है; इत्यादि।

अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

मुख्य परीक्षा

5. ठेका श्रम से आप क्या समझते हैं? इसके प्रमुख कारकों को स्पष्ट करते हुए उचित समाधानों की संक्षिप्त चर्चा करें। (10 अंक)

What do you understand by contract Labour? Briefly discuss its effective solutions by explaining its key factors. (10 Marks)

मॉडल उत्तर

उत्तर- भूमिका में निम्न बातों को शामिल करें-

- उचित रोजगार के अभाव में न्यूनतम वेतन पर किसी बिचौलिये के माध्यम से निश्चित कार्य/श्रमबल ठेका श्रमिक कहलाता है।

ठेका श्रम का कारण :

- दोषपूर्ण अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली
- पाठ्यक्रम आधारित शिक्षा प्रणाली न कि प्रयोगात्मक
- अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि
- माल्थस का जनसंख्या वृद्धि का ज्यामितीय सिद्धान्त तथा संसाधनों की वृद्धि का अंकगणितीय सिद्धान्त।
- बाजार में लक्ष्य आधारित कार्यों पर बल तथा समयाभाव।
- रोजगार की जानकारी का अभाव।
- आउट सोर्सिंग का बढ़ता प्रचलन इत्यादि।
- आर्थिक सुधार से उत्पन्न प्रतिस्पर्द्धा और उत्पाद लागत कम करने पर जोर।
- श्रम सुधार कानूनों का समुचित क्रियान्वयन का अभाव इत्यादि।

समाधान-

- प्रयोगात्मक शिक्षा पर बल तथा ब्रिटिशकालीन शिक्षा व्यवस्था में बदलाव करना चाहिए।
- कौशल विकास कार्यक्रम का और विस्तार करना चाहिए।
- निश्चित अवधि तक काम की गारंटी देना चाहिए।
- बिचौलियों तथा मजदूरों का अनिवार्य पंजिकरण करना, जिससे बिचौलियों की मनमानी पर रोक लगाया जाए।
- जनसंख्या नियंत्रण का समुचित उपाय करना चाहिए।

अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

मुख्य परीक्षा

6. **यद्यपि कि मनरेगा संविधान में निहित सामाजिक न्याय की संकल्पना को पूर्ण करता है, परन्तु फिर भी इसकी कुछ नकारात्मक परिणाम भी देखे गए हैं। उचित तर्कों के साथ स्पष्ट करें। (15 अंक)**
However MNREGA fulfills the concept of Social Justice contained in the constitution instead some of its negative outcomes have been observed. Explain with proper arguments. (15 Marks)

मॉडल उत्तर

उत्तर- भूमिका में निम्न बातों को शामिल करना चाहिए-

- मनरेगा द्वारा आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक न्याय प्राप्त करने का एक माध्यम योजना है, जिसे वर्ष 2005 में केंद्र द्वारा लाया गया था।

विषय वस्तु में निम्न बातें बताना चाहिए :

- मनरेगा के तहत एक निश्चित दैनिक मजदूरी पर पंजीकृत परिवार के एक वयस्क सदस्य को न्यूनतम 100 दिन तक काम की गारंटी द्वारा आर्थिक सशक्तिकरण।
- मनरेगा के द्वारा स्त्री-पुरूष समानता पर बल द्वारा महिला सशक्तिकरण।
- इसके द्वारा भूमि विकास, जल-संसाधन विकास एवं संरक्षण, वृक्षारोपण, सूखा निवारण, बाढ़ नियंत्रण तथा वर्षभर सड़क संपर्क द्वारा प्राकृतिक आपदाओं को कम करने का प्रयास।
- निम्न वर्गीय परिवारों को क्रय क्षमता में वृद्धि, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

नकारात्मक परिणाम :

- कृषि क्षेत्र में मजदूरों की कमी के कारण खाद्यान्न उत्पादन की समस्या के साथ कृषि लागत में वृद्धि हुई है।
- कुशल श्रमिक भी मजदूर बनते जा रहे है, जिससे डिजिटल भारत कार्यक्रम प्रभावित हो रहा है।
- शहरों में विनिर्माण क्षेत्र में मजदूरों की कमी तथा लागत में वृद्धि हुई है।
- केवल न्यूनतम जीवन निर्वहन हेतु संसाधन की प्राप्ति, न कि जीवन में गुणात्मक सुधार हुआ है।
- जनता का तकनीकी विकास प्रभावित हुआ है।
- परम्परागत जाति तथा वर्ग व्यवस्था मजबूत हो रहा है, इत्यादि।

अंत में संक्षिप्त सकारात्मक निष्कर्ष दें।

मुख्य परीक्षा

7. महिलाओं के खिलाफ होने वाले हिंसा का स्वरूप स्पष्ट करें तथा इसके समाधान का उचित उपाय सुझाए। (15 अंक)
Explain the nature of violence against women and suggest effective measures for its resolution. (15 Marks)

मॉडल उत्तर

उत्तर- **भूमिका में निम्न बातों को शामिल किया जा सकता है-**

- महिलाएँ समाज का आधा भाग होने के बावजूद विभिन्न प्रकार के हिंसा का शिकार रही है, जिससे उन्हें अतिसंवेदनशील वर्ग में रखा गया है।

महिलाओं के खिलाफ हिंसा का स्वरूप-

शारीरिक हिंसा-

- 1. यौन उत्पीड़न, 2. मार-पीट, 3. कामकाजी महिलाओं की भूमिका पर प्रश्न चिन्ह, बाल-विवाह तथा भ्रूण हत्या।

मानसिक हिंसा :

- 1. महिलाओं पर नकारात्मक टिप्पणी, 2. लिंग के आधार पर कार्य क्षमता पर प्रश्न चिन्ह लगाना, 3. अश्लील साहित्य, चित्र, विज्ञापन तथा अभद्र निरूपण द्वारा गरिमा एवं प्रतिष्ठा का क्षरण।

समाधान का उपाय :

- संविधानिक प्रयास के अन्तर्गत : अनुच्छेद 14, 15, 23, 39(A), (D), 42, 44, 51 तथा 243 का प्रभावी उपयोग करना चाहिए।

वैधानिक प्रयास :

- बाल-विवाह अधिनियम, 1954 और 1955 को प्रभावी बनाना चाहिए।
- सम्पत्ति का अधिकार एवं हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम का सही क्रियान्वयन।
- दहेज निषेध अधिनियम, 1961, 1986 तथा 2006 (वधू को परिवार से आवश्यक काम के लिए दिया गया आर्थिक सहायता दहेज नहीं)।
- घरेलू हिंसा संरक्षण अधिनियम, 2006।
- महिलाओं का अश्लील प्रतिरूप निषेध अधिनियम 1986 तथा 2013।
- अनैतिक व्यापार निवारण अधिनियम, 2006
- महिला आरक्षण बिल, 2011
- कार्य स्थल पर यौन उत्पीड़न (निवारण निषेध) अधिनियम, 2014
- मातृत्व लाभ विधेयक, 2016
- हाल ही में दिया गया सुप्रीम कोर्ट का निर्णय जिससे 18 वर्ष से कम आयु की लड़की के विवाह उपरान्त संबंध भी अवैधानिक।
- शिक्षा व्यवस्था में सुधार इत्यादि।

अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

मुख्य परीक्षा

8. वर्तमान समय में गैर सरकारी संगठन तथा स्वयं सहायता समूह विकास की आवश्यक धुरी है, बताते हुए इन दोनों के मध्य अन्तर भी स्पष्ट करें। (10 अंक)

At present, NGOs and self-help groups are the essential axis of development. Explaining it also describe the difference between them. (10 Marks)

मॉडल उत्तर

उत्तर- भूमिका में निम्न बातों को शामिल किया जा सकता है-

- गैर सरकारी संगठन तथा स्वयं सहायता समूह सरकार से गैर वित्त पोषित संगठन तथा समूह है, जो अपने विभिन्न क्षेत्रों में संरचनात्मक तथा क्रियात्मक कार्यों द्वारा विकास में भूमिका निभा रहें हैं।

विषय वस्तु में निम्न बातें शामिल करें-

- स्वयं सहायता समूहों द्वारा वित्तीय समावेशन तथा रोजगार निर्माण के माध्यम से विकास में योगदान।
- स्वयं सहायता समूहों द्वारा समावेशी विकास तथा महिला सशक्तिकरण में योगदान।
- गैर सरकारी संगठन शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, अतिसंवेदनशील वर्गों का विकास के द्वारा विकास के समावेशी लक्ष्यों में सहभागिता।

स्वयं सहायता समूह तथा गैर सरकारी संगठन में अन्तर-

- गैर सरकारी संगठन सामान्यत: पंजीकृत होते हैं, जबकि स्वयं सहायता समूह पंजीकृत नहीं होते हैं।
- एनजीओ विकास के लगभग सभी क्षेत्रों जैसे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा मानवीय मुद्दों से जुड़ा होता है। जबकि एस.एच.जी. का मुख्य बिन्दु आर्थिक सशक्तिकरण हैं।
- एनजीओ का वित्तीयन भागीदारी सदस्यों के द्वारा होता है।
- एनजीओ का कार्य क्षेत्र व्यापक है, जबकि एस.एच.जी. का सीमित।
- एनजीओ में गैर सदस्य वोलंटीयर्स के रूप में समाज सेवा कर सकता है, जबकि एसएचजी में केवल एक पृष्ठभूमि के सदस्यों की सहभागिता और विकास पर बल दिया जाता है।

अतं में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

मुख्य परीक्षा

9. **स्पष्ट करें कि 1991 का आर्थिक सुधार सामाजिक न्याय की पूर्ति करता है। समालोचनात्मक परीक्षण करें। (15 अंक)**

Explain that the economic reforms of 1991 is the fulfillment of Social Justice. Critically examine. (15 Marks)

मॉडल उत्तर

उत्तर- भूमिका में निम्न बातों को शामिल करना चाहिए-

- भारत ने अपने आर्थिक हितों को ध्यान में रखते हुए वर्ष 1991 में उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण की नीति अपनायी, जिसके द्वारा क्रमश: अहस्तक्षेप, निजी उद्यमियों को प्रोत्साहन तथा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का भारत में आगमन जैसे महत्वपूर्ण आर्थिक सुधार किये गये।
- इस नवीन आर्थिक सुधारों का भारत के सामाजिक न्याय के क्षेत्र पर व्यापक सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम देखे गये।

सामाजिक न्याय की पूर्ति :

- प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में वृद्धि के कारण विभिन्न क्षेत्रों में श्रम की मांग से रोजगार सृजन हुआ।
- रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों के उद्भव से अवसंरचना निर्माण में कुशल/अकुशल श्रमिकों के मांग में वृद्धि से उनका आर्थिक सशक्तिकरण संभव हुआ।
- मांग आधारित लघु उद्योगों की स्थापना से भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में निवेश के कारण एक बड़ी जनसंख्या का आर्थिक हित पूरा हुआ, जिससे एक बड़ी जनसंख्या के जीवन स्तर में सुधार आया।
- संगठित क्षेत्र के साथ असंगठित क्षेत्र में भी महिलाओं की भूमिका बढ़ी, जिससे उनका आर्थिक पक्ष मजबूत हुआ और महिला सशक्तिकरण की मांग बढ़ी।
- वस्तुओं के निर्माण में गुणात्मक तथा मात्रात्मक सुधार के साथ मूल्य निम्नीकरण हुआ, जिससे आम लोगों की वस्तुओं तक पहुंच संभव हुई।

अंत में समालोचनात्मक निष्कर्ष दें।

मुख्य परीक्षा

10. **सतत विकास लक्ष्य से आप क्या समझतें हैं? इसके महत्व पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। (10 अंक)**
What do you understand by the goal of sustainable development? Give a brief account of its importance. (10 Marks)

मॉडल उत्तर

उत्तर- भूमिका में निम्न बातों को शामिल करना चाहिए-

- संयुक्त राष्ट्र महासभा की 70वीं बैठक में सतत विकास के लिए 17 लक्ष्यों को अपनाया गया, जिसे 15 वर्षों में 2030 तक प्राप्त करना है।
- यहाँ सतत् विकास से तात्पर्य, ऐसे विकास से है, जिसमें वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ भावी पीढ़ियों के लिए पर्यावरण तथा संसाधनों का संरक्षण करना।

सतत् विकास का महत्व :

- संतुलित विकास की दिशा में सामाजिक जुटाव संभव बनाना।
- विशेषज्ञता, ज्ञान और अभ्यास के नेटवर्क को सतत विकास की चुनौतियों का समाधान हेतु प्रोत्साहित करना।
- विभिन्न हितधारकों जैसे नेता, राजनीतिज्ञ, मंत्रालय, गैर सरकारी संगठन, धार्मिक समूह, अन्तर्राष्ट्रीय समूह इत्यादि का समन्वय करना।
- जनता तथा दबाव समूहों के द्वारा नेतृत्व पर दबाव के माध्यम से गतिशील बनाना।
- विकास लक्ष्यों की प्राप्ति की गति तीव्र करना।
- सामाजिक न्याय से युक्त समावेशी एवं सतत् विकास संभव।
- वैश्विक स्तर पर विकास में सामाजिक न्याय की स्थापना और विश्व के देशों के बीच असमानता की समाप्ति संभव।
- रूढ़िवाद, आतंकवाद, उग्रवाद जैसी वैश्विक समस्याओं का समाधान संभव, इत्यादि।

अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।